20वां नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
NEW DELHI WORLD BOOK FAIR
20वां नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

मेला वार्ता 2012
सोमवार, 27 फरवरी, 2012

दिल्ली : लाल किले से रायसीना तक

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में प्रगति मैदान के हॉल नं. 7 में निर्मित दिल्ली मंडप दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इन दिनों नई दिल्ली के भारत की राजधानी बनने के सौ वर्षों का जश्न मनाया जा रहा है और इस सापेक्ष समय में दिल्ली मंडप का अपना महत्व है। इस मंडप में 18वीं सदी से लेकर देश की आजादी के बाद तक के शताधिक दुर्लभ पेंटिंग्स एवं फोटोग्राफ्स की प्रदर्शनी लगी है। 'दिल्ली : लाल किले से रायसीना तक' नाम से लगाई गई इस प्रदर्शनी में जहां अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को जेल में तथा उनकी बेगम जीनत महल को रंगून में निर्वासन अवस्था में देखना त्रासद अनुभव लगता है वहीं देश की आजादी के दिन, 15 अगस्त 1947 को रायसीना हिल के नीचे के भीड़ का विहंगम दृश्य एवं मुगल गार्डन में जून 1948 में अंतिम अंग्रेज गवर्नर जनरल लॉर्ड माउंटबेटन के विदाई समारोह का फोटो मन को आह्लाद से भर देता है।

इस प्रदर्शनी में दर्शक जिन दुर्लभ पेंटिंग एवं फोटो को देख पाने का दुर्लभ संयोग प्राप्त कर पाते हैं उनमें मुख्य हैं : लाल किले के लाहौरी दरवाजे से चांदनी चौक का दृश्य, लाल किले का विहंगम दृश्य, दीवान-ए-आम एवं दीवान-ए-खास, हुमायूं का मकबरा (इसे अब विश्व धरोहर का दर्जा प्राप्त है), सफदरजंग का मकबरा, जामा मस्जिद, कुतुब मीनार आदि। 72 मीटर ऊंची कुतुब मीनार की पेंटिंग (लतीफ द्वारा निर्मित-1820) तथा फोटोग्राफ (नीचे से ऊपर तक-इटली के फोटोग्राफर बीएतो द्वारा-1858) को अगल-बगल प्रदर्शित किया गया है। इन पेंटिंग्स के बीच 1844 में निर्मित मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर तथा 1855 में निर्मित मिर्जा गालिब की पेंटिंग को दर्शक देर तक निहारते हैं। गालिब ने हाथ में हुक्का रखा हुआ है। शाहजहां, औरंगजेब आदि से लेकर बहादुरशाह द्वितीय तक की पेंटिंग एक फ्रेम में है।

पेंटिंग के निर्माण में वाटर कलर, कलम और स्याही आदि का उपयोग किया गया है।

इन पेंटिंग से गुजरते हुए जब हम 1877 में पहुंचते हैं तो ब्रिटिश इंपीरियल दरबारों में पहला दिल्ली दरबार (1877) की पेंटिंग देखते हैं। इस प्रदर्शनी में फोटोग्राफ भी बड़े पैमाने पर प्रदर्शित हैं। इन श्वेत-श्याम फोटोग्राफ को देखना अपने अतीत से जुड़ने का एक अभिनव अवसर प्रदान करता है। इन्हीं में इटली के फोटोग्राफर द्वारा खींचा गया चांदनी चौक का फोटो, सन् 1922 में भारत की स्वाधीनता आंदोलन का दृश्य, आजादी के बाद दिल्ली के दिल कनॉट प्लेस का फोटो, 30 जनवरी 1948 को गांधी की शवयात्रा का फोटो (महिला फोटोग्राफर मारग्रेट बुर्के द्वारा खींचा गया), नई दिल्ली के निर्माताओं एवं अभिकल्पकारों का फोटो (इसमें वायसराय लॉर्ड विलिंगडन एवं शोभा सिंह भी हैं), नई दिल्ली के उद्घाटन समारोह (10 फरवरी 1931) का फोटो, नई दिल्ली को 12 दिसंबर 1911 को दिल्ली दरबार में किंग जॉर्ज पंचम द्वारा राजधानी घोषित करने वाला फोटो तथा आज के संसद भवन (तब के काउंसिल हाउस) के शिलान्यास (1922) के दृश्य के फोटो बेहद अहम एवं ऐतिहासिक हैं। 1922 में दिल्ली के निर्माण की लागत में वृद्धि संबंधी दस्तावेज आंकड़ेबाजों को खूब लुभाएगा।

विदित हो कि यह प्रदर्शनी रोली बुक्स की पुस्तकों पर आधारित है। नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली सरकार तथा कुछ अन्यों द्वारा समर्थित इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित छवियां ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन, ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन, दिल्ली आर्काईव्स, प्रेस सूचना ब्यूरो, रोली कलेक्शन आदि से प्राप्त की गई हैं। रोली बुक्स से प्रकाशित जे पी लॉस्टी, सलमान खुर्शीद, रतीश नंदा तथा मालविका सिंह की पुस्तकों पर आधारित इस प्रदर्शनी की परिकल्पना प्रमोद कपूर की है।

भारतीय सिनेमा के 'सौ साल' का सफर

भीड़ भरे रविवार की सुबह नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा भारतीय सिनेमा पर आधारित विशेष मंडप के पहले कार्यक्रम में जानी-मानी कलाकार सुषमा सेठ ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। इस कार्यक्रम में उन्होंने अपनी पुस्तक 'स्टेज प्ले : दी जर्नी ऑफ एन एक्टर' के चुनिंदा अंश को पाठकों के समक्ष पढ़ा। पुस्तकों के बारे में उन्होंने कहा 'किताबें हमें जिस तरीके से कहानियां कहती हैं, कोई और उस तरीके से किस्सागोई नहीं कर सकता।'

कार्यक्रमों की अगली कड़ी के रूप में नेशनल बुक ट्रस्ट ने 'समकालीन भारतीय सिनेमा और साहित्य में हाशिए पर छूटे लोगों का प्रतिनिधित्व' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया। परिचर्चा का संचालन कवि असद जैदी ने किया। असगर वजाहत, प्रो. सतीश कुमार वर्मा, वर्तिका नंदा, मंगलेश डबराल और एस. आनंद जैसी हस्तियों ने इसमें शिरकत की।

मुख्यधारा सिनेमा में दलित प्रतिनिधित्व के बारे में बात करते हुए श्री एस. आनंद ने कहा कि 'दलितों का मुख्यधारा के सिनेमा में चित्रण हमेशा दयनीय रूप में हुआ है।' हाल की फिल्म आरक्षण को केंद्र में रखकर उन्होंने कहा कि 'फिल्म में दलित पात्र को निभाने के लिए सैफ अली खान को चुना गया। यहां यह प्रश्न उठता है कि हमारे पास दलित किरदार निभाने के लिए क्यों कोई दलित अभिनेता नहीं है।' टेलीविजन जगत में साहित्य की स्थिति पर चर्चा करते हुए वर्तिका नंदा ने बताया कि 'नव-उदारवाद के आने के बाद टेलीविजन पर साहित्य की भाषा बदल गई।' भाषायी उपनिवेशवाद पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि 'टेलीविजन जगत ऐसे सांस्कृतिक उत्पादों को बनाने लगा जिससे बाजार की रुकावटों को समाप्त किया जा सके।' प्रो. सतीश कुमार ने पंजाबी सिनेमा में सामाजिक समीकरणों की आलोचना प्रस्तुत की।

प्रसिद्ध साहित्य असगर वजाहत ने समकालीन सिनेमा की स्थिति पर बात करते हुए कहा कि 'आज का सिनेमा उन चीजों को दिखाता है जो लोग देखना चाहते हैं। जो लोग नहीं देखना चाहते हैं उसको दिखाने का साहस सिनेमा में नहीं है।' सिनेमा में स्त्रियों की स्थिति पर बात करते हुए प्रसिद्ध कवि मंगलेश डबराल ने कहा कि 'जिस स्वाधीन स्त्री की कल्पना व्यावसायिक सिनेमा कर रहा है वो वास्तव में स्वाधीन नहीं है।' समानांतर सिनेमा के लिए नए माध्यमों के रूप में इंटरनेट के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा, 'जो फिल्मों की व्यवस्था के लिए असुविधाजनक है उनको नया थियेटर मिला है इंटरनेट'। इस परिचर्चा में अच्छी संख्या में श्रोता उपस्थित थे। परिचर्चा के अंत में श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए।

सायंकालीन सत्र में शांतनु धर द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम में मशहूर गीतकार जावेद अख्तर तथा निर्देशक सतीश कौशिक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस मौके पर जावेद अख्तर ने कहा कि 'विकास की रेल पकड़ते वक्त हमारा साहित्य प्लेटफॉर्म पर छूट गया'। दीपा चौधरी ने इस कार्यक्रम का संचालन किया। दिन के अंत में सिनेमा प्रेमियों के लिए अबरार अल्वी द्वारा निर्देशित फिल्म 'साहिब, बीवी और गुलाम' का प्रदर्शन किया गया। 155 मिनट लंबी अवधि की फिल्म गुरुदत्त और मीना कुमारी के मंझे हुए अभिनय के कारण भारतीय सिनेमा में मील का पत्थर साबित हुई है।

बच्चे कैसे समझें भारत की विविधता को

बाल मंडप में 'माय लिटिल इंडिया' विषय पर गोष्ठी संपन्न

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के बारे में बच्चों की समझ विकसित करने के लिए किस तरह से पठन सामग्री प्रस्तुत की जाए? इस गंभीर विषय पर नेशनल बुक ट्रस्ट के अनुभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय गोष्ठी के समापन दिवस पर साहित्य की विभिन्न विधाओं के लब्धप्रतिष्ठ लेखकों ने गहन विमर्श किया। दूसरे दिन का पहला सत्र भारत के बारे में बच्चों को जानकारी देने के कार्य में लेखकों के समक्ष चुनौतियों पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता करते हुए प्रयाग शुक्ल ने भारत की झांकी प्रस्तुत करने वाली कुछ कविताएं पढ़ीं। दास बेन्हूर का कहना था कि असली भारत दिल्ली-मुंबई जैसे महानगरों में नहीं, सुदूर छोटे-छोटे गांवों में बसता है। सुश्री सुभद्रासेन गुप्ता ने अपना उद्‌बोधन इतिहास के विषयों को बच्चों तक पहुंचाने के तरीके पर केंद्रित किया।

भारत की सही तस्वीर बच्चों तक पहुंचाने के कार्य में चित्रकारों के सामने आने वाली चुनौतियों के विमर्श वाले सत्र की अध्यक्षता सुबीर रॉय ने की। मुंबई से आए आबिद सुरती और दिल्ली की विकी आर्य ने इस विषय पर तकनीक, रंग, प्रस्तुति के आयामों से प्रकाश डाला। इस कार्य में प्रकाशकों को किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है इस प्रश्न का उत्तर तलाशने के लिए शिशु साहित्य सदन, कोलकाता के देबज्योति दत्ता, करडी टेल्स, चेन्नई की सुश्री मानसी सुब्रह्मण्यम और एसीके मीडिया की सुश्री सयोनी बसु ने विचार व्यक्त किए। गोष्ठी का अंतिम सत्र भारत के बारे में बच्चों की सही समझ विकसित करने की संभावनाओं पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता विकासनारायण राय ने की। असम से आए अरूप कुमार दत्ता और सुजाता चटर्जी चौधरी ने इस पर विस्तार से प्रकाश डाला।

पाकिस्तान की किताबों के दीवाने हैं हिंदुस्तानी

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का शुभारंभ होते ही विदेशी भागीदारों के मंडप में सबसे ज्यादा भीड़ पाकिस्तान से आए सात सहभागियों– नेशनल बुक फाउंडेशन, जादरान बुक हाउस, इकबाल अकादमी, चिल्ड्रन बुक कंपनी, शेख मुबारक अली, मन्शूरियात और रॉयल बुक कंपनी के स्टॉल पर देखी गई। एक बात और कि इस पुस्तक मेला में विदेश से आई पुस्तकों में सबसे ज्यादा भागीदार और किताबें पाकिस्तान से ही हैं। पाकिस्तान सरकार के महकमे नेशनल बुक फाउंडेशन का काम पुस्तकों का प्रचार-प्रसार करना है। वे शिक्षा, समाज, बाल साहित्य जैसे सभी विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। इसके ठीक बगल में इकबाल अकादमी के स्टॉल पर मशहूर कवि अल्लामा इकबाल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अंग्रेजी और उर्दू में कई पुस्तकें उपलब्ध हैं।

पाकिस्तान की पुस्तकों की झलक

शेख मुबारक अली के स्टॉल पर पाकिस्तान के कई प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की गई संस्कृति, भाषा, साहित्य आदि लगभग सभी विषयों पर अंग्रेजी, हिंदी, गुरुमुखी और सिंधी में पुस्तकें बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। चिल्ड्रन बुक कंपनी, कराची वैसे तो बच्चों के लिए उर्दू में पुस्तकें प्रकाशित करती है, लेकिन इस स्टॉल पर शाहरुख खान, कार्ल मार्क्स जैसे व्यक्तित्वों पर अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भी मौजूद हैं। जादरान बुक हाउस, लाहौर के मूसा मलिक के मुताबिक वे शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा पर सबसे ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित करते हैं, लेकिन इस बार नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के केंद्रीय विषय– 'सिनेमा' के मद्देनजर उन्होंने हिंदी सिनेमा जगत पर भी एक पुस्तक प्रकाशित की है, जो थीम पेवेलियन में भी प्रदर्शित है।

मन्शूरियात, लाहौर केवल इस्लाम पर अंग्रेजी और उर्दू में प्रकाशन करता है। रॉयल बुक कंपनी, कराची का स्टॉल पूरे पाकिस्तान की राजनीति, समस्याओं और नीतियों को समझने का स्थान कहा जा सकता है। यहां बलुचिस्तान आंदोलन और गुलाम मुहम्मद खान बुग्ती पर कई पुस्तकें हैं तो जुल्फिकार अली भुट्टो और बेनजीर पर भी साहित्य है। रोड टु इंडियन फ्रीडम और फॉरेन इन्फ्लूएंस इन एन्शिएंट इंडो-पाकिस्तान जैसी किताबें दोनों देशों की साझा संस्कृति-इतिहास की गवाह हैं।

पुस्तक लोकार्पण और अन्य आयोजन

मंजुली पब्लिकेशंस, नई दिल्ली के तहत पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि लेखिका रमा पांडेय थीं। अन्य अतिथियों में सुनी हापुड़िया (योग शास्त्री), वेद प्रकाश कंवर, टी.पी. श्रीवास्तव, डॉ. चंद्रमणि ब्रह्मदत्त, डॉ. पुष्पा सिंह विसेन, हरभजन सिंह और रश्मि मल्होत्रा थे। यहां कुंवर नटुआ दयाल, फुहार अंगना में बरसे, सोर्स ऑफ इंसपिरेशन, वीणा की झंकार, करियर और फॉर फ्यूचर और लुटता कारवां,हमसफर, ये मेरा हिंदुस्तान है, चरागों की तन्हाइयां, पानी के बुलबुले, समुंदर तोन परताड़ी नदी (पंजाबी), राहों में तुम्हारी, प्रेम पदावली, यही एक पल, बुद्धायत, अंजुरी भर-भर, डरे हुए लोग (उर्दू), सुनहरे फ्रेम (पंजाबी), पीने की सजा, तिनका-तिनका और ज्ञान गंगा शीर्षक पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

अनुभव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रो. शिवानंद कामड़े की पुस्तक 'सिनेमा की पहली महिला संगीतकार बिब्बो' (रजिया सुलतान) का लोकार्पण हरिपाल त्यागी ने किया। वाणी प्रकाशन के स्टॉल पर पत्रकार प्रदीप सौरभ की पुस्तक 'देश भीतर देश' का भी लोकार्पण हुआ। पंजाबी हेल्पलाइन द्वारा प्रकाशित निर्देशिका की सी.डी. तथा पंजाबी वार्तक : पुनर्विचार नामक पुस्तक का लोकार्पण भी किया। इसमें मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार में उद्योग और कानून मंत्री रमाकांत गोस्वामी और अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य पुष्पिंदर सिंह थे।

इटली मूल की लेखिका कैमिला काउती की पुस्तक 'ईजी ब्रेस्ट फीडिंग' विमोचन किया गया। इस किताब को बी. जैन पब्लिशर्स ने प्रकाशित किया है।

सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली लेखिकाओं में शुमार प्रिया कुमार ने आत्मविश्वास बढ़ाने की मिसाल गर्दन से लोहे की रॉड मुड़वा कर दी। वे अपनी नई पुस्तक 'आई एम अनदर यू' की ऑडियो सीडी लांच करने के मौके पर फ्लिपकार्ट.कॉम के स्टॉल पर आई थी। जानी-मानी होम्योपैथिक चिकित्सक डा. रितु अरोरा की पुस्तक 'बोल्ड एंड ब्यूटीफुल' का विमोचन किया गया। एनजीओ 'हेल्पेज इंडिया' के आयोजन वाले इस कार्यक्रम में श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. जौली के हाथों विमोचन हुआ।

नर्सिंग शिक्षा पर सेमिनार ऐल्सवेयर हेल्प साइंस ने 'नर्सिंग शिक्षा वर्तमान और भविष्य' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजित किया। इसमें सुजाता चक्रवर्ती सहित नर्सिंग शिक्षा के अनेक विशेषज्ञों ने विषय पर अपने विचार रखे।

भारतीय प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ (एफपीबीएआई) ने अपने सदस्यों के बीच बेहतर संवाद के लिए एक मिलन समारोह का आयोजन किया। 400 सदस्यों वाले एफपीबीएआई के लगभग 20 प्रकाशक सदस्यों ने इसमें हिस्सा लिया। एफपीबीएआई के अध्यक्ष कैलाश बलानी ने बताया कि दिल्ली से बाहर के प्रकाशकों से सही सामंजस्य बनाने के लिए यह मुलाकात रखी गई थी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

लाल चौक पर दिल्ली सरकार के साहित्य कला परिषद द्वारा राजस्थान के लोक संगीत व नृत्य का आयोजन

आज के कार्यक्रम : 27 फरवरी 2012, सोमवार

तिथि/समय	कार्यक्रम	स्थान	हॉल नं.	आयोजक
प्रातः 10 बजे	प्रकाशन में संपादन का नया तरीका	मेजनीन	14	फ्रांस दूतावास व नेशनल बुक ट्रस्ट
प्रातः 11 से 1 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह एवं विमर्श	सभागार 1	6	अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, उ.प्र.
प्रातः 11 से 1 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण	सभागार 3	14	क्यूबेंड डिजिटल कंटेंट प्रा.लि.
प्रातः 11 से 1 बजे तक	माईंड पावर वर्कशाप	सभागार 1	6	माईंड पावर एजुकेशनल एड
प्रातः 11 से 1 बजे तक	ई-बुक्स की प्रस्तुति पर विमर्श	सभागार 2	6	बुकगंगा.कॉम, पुणे
प्रातः 11 से 1 बजे तक	विमर्श	सभागार 3	14	यूनीक पब्लिशर्स प्रा.लि.
अपराह्न 3 से 5 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 1	6	नेशनल पुलिस अकादमी, हैदराबाद
अपराह्न 3 से 5 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 2	6	ज्योतिपर्व, गाजियाबाद, उ.प्र.
अपराह्न 3 से 5 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 3	14	ऑल बंगाल पब्लिशर्स एसोसिएशन, कोलकाता
सायं 5 से 7 बजे तक	हिंदयुग्म.कॉम का वार्षिक समारोह	सभागार 2	6	हिंदयुग्म.कॉम, नई दिल्ली
सायं 5 से 7 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 3	14	चिंता पब्लिशर्स, त्रिवेंदम

बाल मंडप में आज (हॉल नं. 14)

तिथि/समय	आयोजक	गतिविधि
पूर्वाह्न 10.30 से 1 बजे तक	फिनलैंड का दूतावास, नेशनल बुक ट्रस्ट एवं ए एंड ए बुक ट्रस्ट	फिनलैंड की बाल-पुस्तकों का लोकार्पण और बच्चों द्वारा समीक्षा फिनलैंड एवं भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रांकन-कार्यशाला
	एल्कॉन इंटरनेशनल स्कूल, मयूर विहार	पुस्तकों एवं पठन पर गीतों का प्रस्तुतीकरण
अपराह्न 3.30 से 5.30 बजे तक	पब्लिशर्स एक्शन ग्रुप (पेज-ई)	'सेलेक्शन ऑफ चिल्ड्रन्स बुक्स फॉर इंस्टीट्यूशनल लाइब्रेरिज– इज इट क्वालिटी बेस्ड?' विषय पर समूह चर्चा

थीम पेवेलियन : भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष (हॉल नं. 7)

11.30 से 1.30 बजे– लाइट्स, कैमरा, अधिकार! प्रकाशकों और संपादकों की भारतीय सिनेमा पर केंद्रित पुस्तकों के संदर्भ में चर्चा, आयोजक– नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया (वक्ता– अमरनाथ वर्मा, वी.के. कार्तिक, मितारदू बसु, दीपा चौधरी)। **4 से 5 बजे**– 'रिप्रेजेंटेशन ऑफ अवध कल्चर इन इंडियन सिनेमा', लेखक : मुंतजीर कयामी का लोकार्पण एवं संवाद, आयोजक– तवज्जो.कॉम (वक्ता– मुजफ्फर अली, प्रो. इम्तियाज अहमद)। **5.30 से 8 बजे**– उमराव जान (1981, हिंदी, अंग्रेजी में उपशीर्षक) उमराव जान अदा (1905), मिर्जा हादी रुसवा और मुजफ्फर अली की कृति पर केंद्रित प्रस्तुति।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सायं 6 से 8 बजे, **लाल चौक, प्रगति मैदान**
आयोजक : **साहित्य कला परिषद**, दिल्ली सरकार

लोक संगीत (राजस्थान) - मंगनीहार, राजस्थान के लोक नृत्य (चरई, घूमर, भवई, अग्नि)

मुख्य संपादक : **डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन'**, कार्यकारी संपादक : **पंकज चतुर्वेदी**, संपादकीय सहयोग : **दीपक कुमार गुप्ता**, उत्पादन : **देवी दीन**, सज्जा : **ऋतुराज शर्मा, सविता प्रसाद**

संवाददाता (आई.आई.एम.सी.) : **अविनाश कुमार चंचल, सुरेश बिजरणिया, पूर्वा कुमारी, विनय प्रकाश त्रिपाठी**

मेला वार्ता, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा 20वें विश्व पुस्तक मेले के लिए प्रकाशित विशेष बुलेटिन है। इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति होना आवश्यक नहीं है।

एक धरती सकलन

श्री एम.ए. सिकंदर, *निदेशक*
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित एवं पुष्पक प्रेस प्रा.लि., ओखला, नई दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित।